साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

मुझे इतना पिला दे साकी

निखिल शर्मा

मुझे इतना पिला दे साकी
कि अब होश न रहे बाकि
छलका दे जरा प्यार का पैमाना
मई आशिक तेरा दीवाना
खो जाने दे जुल्फों की घटाओं में
पागल कर अपनी मस्त आदाओं से
रहे न अब मुझपे मेरा यकीं
मुझे . . .
कोई याद करके सताता है
हर बात पे मुझे रुलाता है
वो पास नहीं है फिर भी मगर
यादों में बसा है वो जाने जिगर
जाये भी तो हम जाएँ किधर
अब हर शख्स में अक्श उसी का आये नजर
कुछ देर भुला दे हमें ताकि
मुझे . . .
उसकी रहगुजर में कैसे कटेगी जिन्दगी
ये कैसी है इश्क की तिस्नगी

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

पागल न कर दे दीवानापन
है अगन लगाये ये सावन
बनके घटा बरसा जा तू
पूरी कर दे तू मेरी आरजू
याद न आये अब उसकी
मुझे . . .